हजारों भुजाओं वाले बाबा बने मददगार

* ब्रह्माकुमारी पूनम, गुरावड़ा (रेवाड़ी)

मुझे बचपन से ही पूजा-पाठ, व्रत आदि का बहुत शौक था और भगवान में बहुत आस्था थी, जो 18 मई, 2009 को पूरी हुई। मुझे पता चला कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बहनें ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर भगवान से भी मिला देती हैं। अधिक उत्सुकता हुई तो मैं नज़दीक के सेवाकेन्द्र पर पहुँच गई जहाँ से मैंने 7 दिन का कोर्स पूरा किया। अब मेरे ही गांव में गीता पाठशाला खोली गई है जहाँ 30 से 50 तक नियमित भाई-बहनों की क्लास चलती है और मैं आत्मा निमित्त बन वहाँ सेवा करती हूँ।

बीस अक्टूबर, 2012 को मेरे युगल शिवम कुमार, जो वर्तमान समय वाटर सप्लाई विभाग, रेवाड़ी में कार्यरत हैं, अचानक ड्यूटी के दौरान ज़मीन पर गिर पड़े। उस समय उन्हें अहसास नहीं हुआ कि शरीर में कोई आन्तरिक गम्भीर चोट लगी है। जब शाम को घर आये तो काफी तकलीफ महसूस होने लगी। मैं तुरन्त उन्हें रेवाड़ी के सरकारी अस्पताल में ले गई लेकिन वहां के डाक्टरों ने चेक करके जवाब दे दिया कि इन्हें ऐसी बीमारी है जिसका इलाज इस अस्पताल में नहीं होता और साथ में यह भी बता दिया कि यदि 24 घन्टे के अन्दर आपरेशन नहीं हुआ तो बहुत मुश्किलें बढ़ जायेंगी। उन्होंने वहाँ से पी.जी.आई. रोहतक के लिए रैफर कर दिया। उस दिन से आगे लगातार तीन दिन की सरकारी छुट्टियाँ पड़ गई थीं। फिर भी मैं बाबा को याद करके, हिम्मत बांध कर उन्हें पी.जी.आई. रोहतक ले आई। डाक्टरों ने कहा, आपरेशन ज़रूरी है लेकिन तीन दिन के बाद होगा और खर्चा भी काफी आयेगा।

बोझ बाबा के हवाले कर दिया

मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था लेकिन लगता था, हज़ारों भुजाओं वाला सर्जनों का सर्जन बाबा मेरे साथ है। ख्याल आया कि यहाँ तीन दिन कुछ भी होने वाला नहीं, पैसे भी पास नहीं और आपरेशन के लिए निर्धारित समय भी निकला जा रहा है इसलिए मैं अपने पति को वापिस रेवाड़ी ले आई। मैं अपना सारा बोझ बाबा के हवाले कर सिर्फ निमित्त बनकर चल रही थी। सरकारी अस्पताल के डाक्टर से मैंने कहा कि आप ही सरकारी खर्चे पर मेरे पति का आपरेशन करा दो, रोहतक आपने भेजा था पर तीन दिन की

छुट्टियाँ पड़ गई हैं इसलिए वापिस आ गई हूँ। डाक्टर ने कहा, मैं पहले ही कह चुका हूँ, यहाँ इस तरह के केस का इलाज नहीं होता, जितना जल्दी हो सके इन्हें डाक्टर राकेश नथानी, जो प्राइवेट अस्पताल में न्यूरोलोजिस्ट हैं, के पास ले जाओ। वहीं आपरेशन होगा परन्तु एक बात और बता दूँ कि डाक्टर नथानी कोई गारन्टी नहीं लेगा क्योंकि इस तरह के मरीज़ का आपरेशन आज तक उनके अस्पताल में भी सफल हुआ नहीं है।

ओ.टी.के कोने में योगयुक्त हो गई

उपरोक्त बातों से मैं निराश ज़रूर हुई पर हिम्मत नहीं हारी। न्यूरोलोजिस्ट ने कहा, हमारे पास सिर्फ सात घण्टे का ही समय बचा है इसलिए मरीज़ को भर्ती कराओ तथा पैसे भी जमा करा दो। एक घन्टा बीत

जाने के बाद सगे-सम्बन्धी पहुँचने लगे और पैसों का इन्तज़ाम होने लगा। इसके बाद डॉ.नथानी ने मेरे पति को आपरेशन थिएटर (ओ.टी.) में जाने को कहा। वे ओ.टी. टेबल पर जाकर लेट गये। मैंने तुरन्त बाबा का लाकेट, जो मेरे गले में था, पति की पाकेट में डाल दिया और कहा, बाबा, जब तक इनका आपरेशन चले तब तक कोई घबराहट नहीं आनी चाहिए और आपरेशन सफल होना चाहिए। मैं वहीं ओ.टी. में एक कोने में मौन रहकर बाबा से योग लगाने लगी, डाक्टर्स नहीं चाहते थे कि मैं वहाँ बैठूँ।

आपरेशन सफल हुआ

जब तक आपरेशन चलता रहा, मैं ओ.टी. में बाबा से योग लगाती रही। काफी देर बाद एक डाक्टर आकर बोले, बहन जी आपके पति का सफल आपरेशन हो गया है। अब इन्हें आराम हो जायेगा और कम से कम 6 महीने आराम करना होगा। मैंने मन ही मन शिवबाबा का शुक्रिया किया और कहा, बाबा, आपका यह अहसान कभी नहीं भुलाया जा सकता। शिवबाबा के आशीर्वाद व प्यार से अब मेरे पति ठीक हो गए।

राजयोग ने किया चमत्कार

अस्पताल से घर चलने के दिन पति ने डाक्टर साहब से कहा, आप मेरे लिए भगवान हैं, जो मुझे मौत के मुँह से निकाल कर ले आये। तब डाक्टर ने कहा, भगवान मैं नहीं, आपकी पत्नी भगवान से जुड़ी हुई हैं। इन्होंने अकेले ही इतनी मुसीबतों का सामना करके समय पर आपरेशन करा लिया और मैंने देखा, पूरे समय वह भगवान से ही योग लगाती रही, यह चमत्कार इन्होंने किया है। उन्होंने आगे कहा, आज तक के मेरे 25-30 साल के अनुभव में इस बीमारी का कोई मरीज़ जिन्दा नहीं बच पाया। आप भाग्यशाली हैं, इस तरह की बीमारी का यह मेरा पहला सफल आपरेशन है।

अब मेरी खुशियाँ वापिस लौट आई हैं। मेरे व मेरे परिवार का जीवन, प्यारे बाबा के ज्ञान ने धन्य-धन्य कर दिया है। बाबा और समस्त दैवी परिवार की सदा आभारी रहूँगी। ❖

ज्ञानामृत पढ़कर लौट आई खुशी

ब्रह्माकुमारी मीना बहन, चालीसगाँव

बात पच्चीस वर्ष पुरानी है, हम जिला भंडारा के पवनी गाँव में रहते थे। बहुत ही निकट संबंधी द्वारा कहे गये कटु वचनों द्वारा मन बड़ा आहत था। न दिन में चैन था, न रात में नींद आतीं थी। मेरे पड़ोस में रहने वाली बहन के यहाँ एक ब्रह्माकुमारी बहन आयी, उसने मुझे ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के लिए दी। पत्रिका के लेख पढ़कर बड़ी शान्ति और सुकून मिला, रात में नींद भी आने लगी। लेख थे, ''ड्रामा का राज़'', ''कर्मो की गुह्य गति'' आदि। इन्हें पढ़कर मन बड़ा निश्चिंत हो गया, खुशी लौट आयी। तब से मैं ज्ञानामृत की नियमित पाठक बन गई और कुछ वर्षों बाद बाबा की सच्ची बच्ची बन गई, नियमित ज्ञान में चलने लगी। अब तो अपनी सभी समस्याएँ बाबा पर छोड़ देती हूँ, बाबा सब संभाल लेते हैं। कई बार बाबा से मिलन भी मना चुकी हूँ और वह सब कुछ पा चुकी हूँ जो बाबा से हर रिश्ते में चाहिए था। पाना था सो पा लिया, अब न कुछ बाकी रहा।

सभी पाठकों से निवेदन है कि यह पत्रिका संबंध, सम्पर्क, जाने, अनजाने जो भी मिलें, सभी को पढ़ने के लिए देते रहें। जिस तरह मेरी खुशी लौट आयी, मुझे खुशियों भरा जीवन मिला, जीवन में दिव्यता आ गई, इसी तरह न जाने कब, कहाँ, किस की खुशी इसे पढ़कर लौट आये और वे बाबा के बन जायें। ❖